# भूमिका

वर्त्तमान में भारत का सबसे ज्वलंत मुद्दा कृषि क्षेत्र में किसानों की हो रहीं आत्महत्या को लेकर है जिससे सम्पूर्ण भारत आहात है। भारत में महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र में किसान आत्महत्या के प्रमाण सबसे ज्यादा है। इसी बात को नारीवादी दृष्टी से देखने पर किसान आत्महत्या ग्रस्त विधवा महिलाओं की जीवन यापन करने की स्थितियाँ एवं इन सभी सामाजिक पारिवारिक दाइत्वों को पूरा करती विधवा महिलाओं के मानसिकता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है और उनकी मानसिक स्थिति किस हद तक प्रभावित होती है इसका पता लगाना बेहद आवश्यक था। स्त्री अध्ययन की शोधार्थी होने के नाते किसान आत्महत्या एवं किसान आत्महत्या ग्रस्त विधवा महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को नारीवादी दृष्टी से देखना बेहद महत्वपूर्ण लगा।

इसी सोच को आगे बढाते हुवें इस शोध के अंतर्गत प्रथम अध्याय 'भारत में कृषि स्थितियाँ और किसान आत्महत्या' में भारत भर कृषि की स्थितियाँ क्या है और किसानों की हालत किस प्रकार है यह देखा गया है। भारत में ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में कृषि की स्थितियाँ, वहीँ आझादी के पहले का कालखंड, स्वतंत्र भारत का कालखंड और भूमंडलिकरण के कालखंडों को इसमें दर्शाया है जो यह प्रस्तुत करते है की भारत में बदलते हालातों से भारतीय अर्थव्यवस्था, कृषि और किसानों पर किस प्रकार से असर हुआ है जो इसमें दिखाया गया है। इसमें किसानों की बदलती स्थिति एवं किसानों के आत्महत्या के कारणों का भी पता लगाने की कोशिश की गई है।

द्वितीय अध्याय यह 'किसान आत्महत्या ग्रस्त महिलाओं की केस स्टडी' पर आधारित है। यह केस स्टडी भी दो भागों में विभाजित की गई थी जिसमें सर्वप्रथम किसान आत्महत्या ग्रस्त विधवा महिला एवं आस-पडोस की किसान आत्महत्या देखकर हरवक्त अपने पति को लेकर भयग्रस्त रहने वाली महिलाओं को लिया गया गया है। इसमें उन महिलाओं के नरेटीव्स एवं साक्षात्कार के आधार पर उनके जीवन के बारे में जाना गया है जिसमें उन महिलाओं के बोले गए वाक्यों को वैसे का वैसा रखा है। जिनके आधार पर दोनों के मानसिक स्थिति और काम की स्थितियों का पता लग सका। इसमें भयग्रस्त महिलाओं का चयन भी इसीलिए किया गया है की वह उन विधवा महिलाओं के बारे में और पडोसी किसान आत्महत्या के विषय में क्या सोचती है और विधवा महिलाओं के समस्याओं को वह किस प्रकार देखती है इसका अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'किसान आत्महत्या का महिलाओं पर प्रभाव' में उनके सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्तर पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन केस स्टडी के आधार

पर ही किया गया है जो द्वितीय अध्याय के आधार पर अवलंबित है। इसमें किसान आत्महत्या ग्रस्त विधवा महिलाओं के साथ-साथ भयग्रस्त महिलाओं के स्थितियों का भी संक्षेप में वर्णन/अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक बदलावों से महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव' में किसान आत्महत्या से महिलाओं पर सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक प्रभाव होते है और इन सबका रिश्ता महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से कैसे जुड़ा हुवा है इसका मनोवैज्ञानिक आधार पर एवं मनोवैज्ञानिक परिभाषाओं से समझने का प्रयास किया गया है। जो एक बेहद महत्वपूर्ण है। चूँकि पुरुषों को घर-परिवार का पालन-पोषणकर्ता और मुखिया माना जाता है जहाँ महिलाओं को बाहर जाने या बाहर जाकर काम करने की जरुरत नहीं होती इस कारन पति की मृत्यु के बाद महिलाओं को किस प्रकार जीवन जीना पड़ता है और उन्हें किन समस्याओं से होकर गुजरना पड़ता है साथ ही उस घडी में उनकी मानसिक स्थिति पर किस प्रकार से प्रभाव होता है और वह किन-किन मानसिक परेशानियों से पीड़ित होती है इसका अध्ययन इस अध्याय में किया गया है।

पंचम अध्याय 'किसानों तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यों का नारीवादी अध्ययन' है जिसमें की भारत में महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए और सरकार की नई पहल किसानों के आत्महत्या को रोकने के लिए एवं आत्महत्या से उन्हें परावृत्त करने के लिए क्या काम चल रहें है इसका पता लगाने की कोशिश एवं नारीवादी विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध को पूर्णत्व की ओर ले जाने में जिन मार्गदर्शकों का मौलिक मार्गदर्शन और उनके सहकार्य से मै अपना शोध पूर्ण कर पायी, उनमे सर्वप्रथम डॉ. अवन्तिका शुक्ला जो की इस परियोजना कार्य के मार्गदर्शक के रूप में प्राप्त हुए तथा समय-समय पर मुझे सहकार्य दिया, इन्होंने मेरा हौसला बनाएं रखा और अंत तक सुझाव देते रहे और इनके बार-बार हौसलाफजाई से मै यह कार्य पूरा कर सकी जिनका मै विशेष रूप से आभार बहुत ही सन्मान एवं आदरपूर्वक रूप से करना चाहूंगी। मै विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहती हूँ हमारे विभागाध्यक्ष माननीय डॉ. सुप्रिया पाठक का जिन्होंने हमे योग्य सुझाव दिये इसके लिए मै उनकी सदैव आभारी रहूँगी। मै प्रो. डॉ. शम्भू गुप्त का भी आभार व्यक्त करूंगी जिन्होंने हमारा हौसला बढ़ाया। साथ ही सहायक प्राध्यापक चरणजीत सर को धन्यवाद देना चाहूंगी जिन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन दिया।

इसी तरह मेरे जीवनदाता मेरी माँ उषा और पिता आसाराम जाम्भुलाकर का भी तहे दिल से धन्यवाद अदा करती हूँ जिन्होंने बड़े ही तकलीफों से गुजरकर मुझे पढ़ने की निरंतर प्रेरणा दी और मेरे

साथ हर परिस्थिति में खड़े होने का और मार्गदर्शन करने का प्रेमपूर्वक सफल प्रयास किया जिनके कारन मै यह शोध कार्य लिखने के काबिल बन पाई। उसी तरह मै अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति जो मेरे साथ हर कदम पर चलने के लिए तैयार और जीवन के महत्वपूर्ण फैसलों में, जीवन के उतार चढ़ाव में मेरा साथ देने वाले मेरे हमसफ़र श्रीकांत बोरकर जी का भी मै प्रेमपूर्वक आभार मानती हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध के लिए हर संभव प्रयास किया। वही मेरे परिवार के सदस्य मम्मीजी शीला बोरकर का प्रेमपूर्वक एवं सीमा बोरकर, रजनीकांत बोरकर का मैत्रीपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। मुझमें आन्दोलन की प्रेरणा और सामाजिक दाइत्वों का एहसास दिलाने का प्रयास करने वाले मेरे पितासमान संजय नगरकर जी का मै विशेष आभार व्यक्त करती हूँ साथ ही इस विषय के चुनाव एवं सम्बंधित संगठनों की जानकारी देने का प्रयास करने वाले डॉ. धम्मासंगिनी मैडम की भी मै तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ। जिन्होंने मेरी हर संभव मदत की।

इसी प्रकार मै अपने समस्त वरिष्ट विद्यार्थियों एवं मित्र परिवार जिनमें मै इनका विशेष रूप से आभार व्यक्त करुँगी जिनमें नीलिमा ताकसांडे, विद्या चंदनखेडे, सुनीता, अपर्णा, सविता कोल्हे, सोनाली, नेहा, आरती शर्मा, मंजू आर्य, दिव्या, रविंद्र कुमार, नूरिश, विशाल एवं सभी साथियों की मै आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर हरसंभव मदत करने हौसला बढाने का सफल प्रयास किया। तथा विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूंगी उन्हें जिन सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाओं एवं उनके पदाधिकारियों (नागपुर, वर्धा व यवतमाल) को जिन्होंने मुझे अपना अमूल्य समय दिया। साथ ही शोध कार्य के लिए चुने गए उत्तरदाता जिन्होंने मुझे अपने काम का अमूल्य समय देकर अपनी दिनचर्या, काम एवं पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों को बिना हिचकिचाहट से अवगत कराया तथा छायाचित्र लेने की अनुमति प्राप्त की। अंत में मै शुभांगी काले को धन्यवाद देना चाहूंगी जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिए अपने घर भिड़ी गाँव में एक महीने तक रहने की सुविधा उपलब्ध कराई जिससे मै अपने शोध क्षेत्र में बिना किसी रुकावट से काम करती रहीं अंत में विभाग के सभी सहयोगी कांचन, अमोल, रंजना मैडम ने मुझे समय-समय पर मदत की जिनकी मै बहुत आभारी हूँ।

**शोधार्थी**

आम्रपाली जाम्भुलकर

स्त्री अध्ययन विभाग, संस्कृति विद्यापीठ,

(म. गा. अं. हिं. वि. वर्धा)